उत्तर-औद्योगिक समाज एवं संस्कृति : विमर्श के आयाम

(विमर्श)

संपादक

हेमन्त कुमार झा

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-91925-08-6

उत्तर-औद्योगिक समाज एवं संस्कृति : विमर्श के आयाम

© हेमन्त कुमार झा

पहला संस्करण (सजिल्द) : 2021

मूल्य : 475.00 रुपए

प्रकाशक

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

सी-56/यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फ़ोन : +91-9871856053
ई-मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

आवरण चित्र : विनय अंबर

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

UTTER-OUDHYOGIK SAMAJ EVEM SANSKRITI : VIMARSH KE AAYAM (Discourse) by Hemant Kumar Jha
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II
Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : ₹ 475.00

विडंबनाओं और विरोधाभासों के बीच जन-मन

(उत्तर-औद्योगिक समाज और संस्कृति के संदर्भ में)

डॉ. शशिकला जायसवाल

विभागाध्यक्ष हिंदी, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर (उ.प्र.)

संस्कृति सामाजिकता की अभिव्यक्ति है, संबंधों का पुनरुत्पादन है, नैतिकता, सामाजिकता, ज्ञान, रीति-रिवाजों का समुच्चय है। मनुष्य की मनुष्यता, आदर, विवेक और विशिष्टता तथा मूल्यों का विस्तार ही संस्कृति है और यही संस्कृति हमारी पहचान और अस्तित्व को उद्घाटित भी करती है। जनजीवन की समस्याओं को समझने और उसके निराकरण के लिए उत्तर की तलाश भी हम संस्कृति के मंथन से ही कर सकते हैं। भूमण्डलीकरण और वैश्विक ग्राम के इस दौर में विज्ञान के माध्यम से विकास की चकाचौंध है, कम्प्यूटर ने देशकाल की चेतना बदल दी है परन्तु इसमें सृजन और विनाश का समन्वय भी है। भारतीय और प्राच्य मनीषा ने अतीत में प्रकृति के चिंतन संबंध को गहराई से टटोला और एक सामाजिक ढांचा तैयार किया जिसमें प्राणीमात्र की चिन्ता और उनका सुरक्षित भविष्य ही लक्ष्य था। लेकिन उत्तर आधुनिक औद्योगिक समाज में सबकुछ बाजार के हवाले है। बाजार के मूल में वस्तु और वस्तु का मूल्य प्रमुख है, मानवीय मूल्य नहीं। सांस्कृतिक धरोहर पर्यटन और आय के अवसर हैं और मानवीय मूल्य सामाजिक संबंध के नहीं अपितु बाजार के संबंधों के मोहताज हैं। फिल्म, टेलीविजन, रेडियो और विज्ञापनों के माध्यम से वह संस्कृति प्रस्तुत की जा रही है जो उपभोक्ता समाज को लुभाने का आडम्बर है। सरकारें भी विविध संस्थाओं के माध्यम से समाज को उन्नत बनाने का प्रयास करने का टेंडर निकालती रहती हैं, इससे दूरियाँ और बढ़ी हैं। परन्तु, प्रकृति आधारित संस्कृति, जिसमें मनुष्यता प्रमुख आधार है, वह निरन्तर टूटती और बिखरती जा रही है। अस्मिता के नाम पर उत्तर आधुनिक स्त्रियाँ हों या दलित आदिवासी विमर्श हो, सभी पूँजीवाद की भेंट चढ़ते जा रहे हैं। सशक्तिकरण के चक्कर में टकराहट का मार्ग अपनाना

एकमात्र विकल्प बनती दिखाई देगी। सदियों से चली आ रही व्यवस्था में आई विकृतियों का सफाया जरूरी है, परन्तु उसे दफन कर देने से भी केवल कब्र-भूमि रह जायेंगे, बचेगा कुछ भी नहीं। विडम्बनाओं और विरोधाभासों के बीच फँसा जन-मन उत्तर की तलाश में है। इस पर विचार करने की, शोध करने की और एक निश्चित नतीजे पर पहुँचने की बहुत आवश्यकता है। साहित्य में युग बोध है, इसलिए इसी के माध्यम से तत्कालीन से समकालीन तक का मंथन सम्भव है। बुद्धिवाद, भौतिकवाद, मशीनीकरण, औद्योगीकरण इन सब के साथ मानवीयता, मूल्यबोध, नैतिकता, सहृदयता, संवेदना का एकीकरण अत्यावश्यक है। ''समन्वय इनका हो, समस्त विजयिनी मानवता हो जाए।''

संदर्भ :

1. 'संस्कृति का समाजशास्त्र, लेखक मैनेजर पाण्डेय : समकालीन जनमत: वर्ष-25, अंक-2, पृ-85
2. वही पृ-91
3. इन्द्रधनुष रौंदे हुए वे—सच्चिदानंद ही. वा. अज्ञेय : सरस्वती प्रेस, नई दिल्ली, 1957
4. कुकरमुत्ता : सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला: लोकभारती प्रकाशन, 1942
5. साहित्य का समाजशास्त्र : डॉ. बच्चन सिंह : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1973
6. वही, पृ--295
7. गुलमेंहदी : केदारनाथ अग्रवाल, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद
8. निराला—राग विराग : डॉ. रामविलास शर्मा : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2000
9. गद्यकोश : ओ. आर. जी./ : आधुनिकीकरण और अज्ञेय की चिंताएं : संधुनाथ
10. वन डाइमेंशनल मैन : हर्बर्ट मार्क्यूजन : बेकन प्रेस, 1974
11. भोजपुरी लोक साहित्य : कृष्णदेव उपाध्याय : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2008
12. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास : डॉ. बच्चन सिंह: लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013
13. मेरी प्रिय कहानियाँ : भूमिका, कमलेश्वर : राजपाल एण्ड संस, 2011